بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 6 सितम्बर 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

ख़ंदक़ नामक युद्ध के संदर्भ में सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-06.09.24

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज मैं ख़न्दक़ वाली लड़ाई अथवा जिसे ग़ज़वा-ए-अहज़ाब भी कहते हैं, का वर्णन करूँगा जो 5 हिजरी में फ़रवरी, मार्च 627 ई. में हुआ था।

इसके बाद हुज़ूरे अनवर ने सूरः अहज़ाब की आयत 10 से 26 तक तिलावत फ़रमाई और इन आयतों का अनुवाद पेश फ़रमाया।

अनुवाद के बाद हुज़ूरे अनवर ने इस युद्ध का नाम ग़ज़वाए ख़न्दक रखने का कारण बयान करते हुए फ़रमाया कि इसे ख़ंदक़ वाला युद्ध इस लिए कहते हैं क्यूँकि इस युद्ध में अरबों क प्रचलन के विरुद्ध मुसलमानों ने पहली बार ख़न्दक़ खोद कर नगर की रक्षा की थो। इसी तरह इस जंगे अहज़ाब भी कहते हैं तथा क़ुर्आन करीम ने भी इसे यही नाम दिया है।

अहज़ाब वास्तव में हिज़्ब का बहुवचन है जिसका अर्थ जमाअत तथा दल होता है। चूँकि इस युद्ध में अरब की विभिन्न जमाअतें तथा गिरोह एक साथ मिल कर मुसलमानों पर हमला करन आए गए थे इस लिए इसे जंगे अहज़ाब कहा जाता है।

इस युद्ध का कारण यह बना कि रबीउल अव्वल चार हिजरी में यहूदियों का बनू नज़ीर नामक क़बीला अपने वादों को तोड़न, विद्रोह फलान तथा नबी करीम ﷺ की हत्या करने जैसे षड्यन्त्र रचने के कारण मदीने से निष्कासित कर दिया गया था और यह क़बीला ख़ैबर नामक स्थान पर जाकर आबाद हो गया था। अभी चार महीने हो बाते थे कि उपकार का भ्लन वाल तथा षड्यन्त्र की योजना बनाने वाले यहूदियों ने आँहज़रत ﷺ तथा इस्लाम के विरुद्ध अत्यंत भयानक योजना बनाई। अतएव उनका सरदार हुयी बिन अख़तब अपने अग्रसर सथियों सहित मक्के गया तथा वहाँ अबू सुफ़यान एवं अन्य क़ुरैशी सरदारों से भेंट की तथा मुसलमानों के विरुद्ध उन्हें अपने सहयोग का विश्वास दिलाया और यह सुझाव दिया कि हमें चाहिए कि हम सब मिल कर मुसलमानों के विरुद्ध एक समझौता करें। अबू सुफ़यान ने यहूदियों के इन सरदारों का स्वागत किया और कहा कि तुम लोग अपने घर आए हो तथा समस्त लोगों में हमें सर्वाधिक प्यारे हो, जो मुहम्मद (ﷺ) के विरुद्ध हमारी सहायता करे।

क़रैश के साथ षड्यन्त्र की योजना बनाने के बाद यहूदियों का यह प्रतिनिधि मंडल अरब के अन्य क़बीलों के पास गया तथा सबसे पहले बनू ग़तफ़ान के पास पहुंचा। यह क़बीला भी मुसलमानों से अत्यंत भेदभाव रखता था। यहूदियों ने उन्हें सतुष्ट करने के लिए अन्य बातों के अतिरिक्त ख़ैबर के बाग़ों की एक साल की खजूरें देने का वादा किया।

बनू ग़तफ़ान ने यहूदियों का समर्थन करने का निर्णय किया तथा अपनी ओर से छः हज़ार की सेना भेजने का वादा किया। इसके बाद यहूदियों का यह प्रतिनिधि मंडल बनू सुलैम नामक क़बीले के पास पहुंचा जो पहले ही मुसलमानों पर हमले करने का विचार रखता था तथा असफल हो चुका था। जब उसे इतने बड़े हमले का पता चला तो उसने भी ख़ुशी के साथ स्वीकृति दे दी। इसी तरह बनू फ़ज़ारह नामक क़बीला अपने सरदार ईनिया के नेतृत्व में रसूलुल्लाह ﷺ से लड़ाई करने के लिए तय्यार हो गया। ईनिया ने अपने दोस्त क़बीले बनू असद को दावत दी, अतः वे भी इस युद्ध में मुसमलानों के विरुद्ध लड़ाई के लिए तय्यार हो गए। इसी प्रकार कुछ अन्य क़बीले भी यहूदियों की इस संयुक्त योजना का अंश बन गए। ये समस्त क़बीले अपनी दलेरी तथा युद्ध कौशल के कारण पूरे अरब देश में प्रसिद्ध थे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि चूँकि यहूदी लोग बड़े चतुर एवं होशियार थे तथा इस प्रकार के षड्यन्त्रों को रचने में अति निपुण थे इस लिए उनके विद्रोह करने के प्रयत्न सफल हुए तथा अरब के क़बीले एक जान होकर मुसलमानों के विरुद्ध मैदान में निकल आए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. इस संदर्भ में फ़रमाते हैं कि ख़ैबर नामक स्थान अरब में यहूदियों का विशाल केन्द्र एवं क़िले में सुरिक्षत नगर था। यहाँ पहुंच कर बनू नज़ीर ने मुसलमानों के विरुद्ध अरबों में जोश फैलाना शुरु किया।

एक लम्बी तय्यारी के बाद अरब के समस्त शक्तिशाली क़बीलों की एकता की आधार शिला रख दी गई। इस एकता में मक्का तथा उसके आस पास के क़बीले भी शामिल थे। इन सब क़बीलों ने मिल कर मदीने पर चढ़ाई करने के लिए एक विशाल सेना तय्यार कर ली।

मक्का के क़ुरैशी चार हज़ार की सेना लेकर रवाना हुए जिसका नेतृत्व अबू सुफ़यान कर रहा था। सवारों की कमान ख़ालिद बिन वलीद के हाथों में थी। बनू सुलैम के सात सौ लोग भी क़ुरैश के साथ आ मिले तथा उनका नेतृत्व सुफ़यान बिन अब्दे शम्स के हाथ में था। बनू असद तुलैहा बिन ख़वैलिद के नेतृत्व में रवाना हुए। बनू फ़ज़ारा के एक हज़ार लोग निकले जिनका नेतृत्व ईनिया कर रहा था। बनू अशजा तथा बनू मर्रा के चार चार सौ आदमी निकले। बनू ग़तफ़ान की ओर से छः हज़ार सैनिकों का वादा था तथा यहूदियों की ओर से दो हज़ार रिज़र्व सेना थी। यूँ विभिन्न क़बीलों की इन सेनाओं की सामूहिक संख्या लगभग दस हज़ार तथा कुछ रिवायतों के अनुसार चौबीस हज़ार तक बयान की गई है। इन सबका नेतृत्व अबू सुफ़यान बिन हरब के हाथ में था। यह उस समय तक का अरब के इतिहास का सबसे बड़ा सैन्य अभियान था।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि यदि दस हज़ार संख्या के अनुमान को भी उचित मान लिया जावे तो फिर भी उस ज़माने की दृष्टि से यह संख्या इतनी बड़ी थी कि सम्भवतः उससे पहले अरब के क़बाईली युद्ध में इतनी बड़ी संख्या कभी किसी युद्ध में शामिल नहीं हुई थी। खाद्य सामग्री तथा युद्ध का सामान भी हर प्रकार से उपलब्ध था। यह सेना शव्वाल 5 हिजरी, फ़रवरी मार्च 627 ई. में मदीने की ओर बढ़ना शुरु हुइ।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान करते हैं कि विभिन्न इतिहासकारों ने इस सेना का अनुमान दस हज़ार से चौबीस हज़ार लगाया है, परन्तु यह स्वभाविक है कि समस्त अरब के संयुक्त होने का परिणाम केवल दस हज़ार सैनिक नहीं हो सकता, निश्चित ही चौबीस हज़ार वाला अनुमान अधिक सटोक है, और कुछ नहीं तो यह सेना अठारह बीस हज़ार की संख्या में तो अवश्य ही होगी। मदीना एक छोटा सा क़सबा था, इस क़सबे के विरुद्ध पूरे अरब की चढ़ाई कोई हल्की चढ़ाई नहीं थी। मदीने के पुरुष एकत्र करके जिसमें बूढ़े, जवान, तथा बच्चे भी शामिल थे, केवल तीन हज़ार आदमी निकल सकते थे। इसके विरुद्ध दुश्मन की सेना बीस से चौबीस हज़ार के लगभग थी तथा फिर वे सबके सब फ़ौजी आदमी थे।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि जब काफ़िरों की तय्यारियों की सूचना रसूलुल्लाह ﷺ को मिली तो आप स. ने फ़ैसला फ़रमाया कि ख़न्दक़ खोदी जाए। इसके विस्तार में लिखा है कि आँहज़रत ﷺ का जासूसी विभाग भी इस पूरी स्थिति से असावधान न था तथा चारों ओर से ख़बरें आँहज़रत ﷺ तक पहुंच रही थीं।

क़ुरैश और यहूदियों की इस भयानक योजना की सूचना मदीने में पहुंची तो आँहज़रत ﷺ ने सहाबियों को जमा किया तथा उन्हें दुश्मन की बुरी धारणाओं से अवगत किया तथा विचार विमर्श किया

कि क्या मदीने से निकल कर मुक़ाबला किया जाए अथवा मदीने में रह कर इतने बड़ी सेना का मुक़ाबला किया जाए। रिवायतों के अनुसार हज़रत सलमान फारसो रज़ी. ने यह सुझाव दिया कि हम फ़ारस की धरती पर जब घोड़ों के दल से डरते तो उनके आगे ख़न्दक़ खोद देते थे। यह सुझाव सबको अच्छा लगा तथा आँहज़रत ﷺ ने मदीने मे रहते हुए बचाव करने तथा ख़न्दक़ खोदने का निर्देश दिया। कुछ सीरत की पुस्तकों से पता चलता है कि ख़न्दक़ खोदने का यह निर्णय केवल हज़रत सलेमान फ़ारसी रज़ी. के सझाव के कारण नहीं था बल्कि अल्लाह तआला ने इलहाम के माध्यम से नबी करीम ﷺ को यह तरीक़ा बताया था, क्यूँकि अरब के लिए यह तरीक़ा बिलकुल नया था।

इस विषय के अंतर्गत यह वर्णन भी मिलता है कि जब काफ़िरों की सेना ख़न्दक़ का पार करने में असफल हो गई तो अबू सुफ़यान ने रसूलुल्लाह ﷺ को एक पत्र लिखा था जिसमें लात तथा उज़्ज़ा नामक बुतों का वर्णन करके यह लिखा कि ख़न्दक़ खोद कर तुम लोग मुक़ाबला करने से पीछे हट रहे हो। इस पत्र के उत्तर में आँहुज़ूर ﷺ ने अबू सुफ़यान को लिखा कि तुम्हारा पत्र मिला, तथा मैं जानता हूँ कि तुम सदैव से अल्लाह तआला के विरुद्ध अहंकार में लिप्त हो और यह जो तुमने अपनी विशाल सेना के साथ मदीने पर ऐसा हमला करने का वर्णन किया है जिससे तुम हमारा नामो निशान मिटाने का संकल्प किए हुए हो तो यह अल्लाह तआला का आदेश है जो तुम्हारे अपवित्र साहस के विरुद्ध रोक बन गया है तथा वह अपना ऐसा फ़ैसला कर देगा कि तुम लात तथा उज़्ज़ा नामक बुतों का नाम तक भूल जाओगे। जो तुमने यह कहा है कि ख़न्दक़ खोदने का मुझे किसने बताया है, तो यह तरीक़ा मुझे अल्लाह तआला ने इलहाम फ़रमाया है। सुनो, परिणाम स्वरूप हमें अल्लाह तआला सफल करेगा।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आँहज़रत ﷺ के इस पत्र से स्पष्ट होता है कि निःसन्देह हज़रत सुलेमान फ़ारसी रज़ी. ने सुझाव दिया होगा, परन्तु उसके अनुसार अमल करने का निर्णय आँहज़रत ﷺ को अल्लाह तआला ने इलहाम के द्वारा ही फ़रमाया हागा।

यह विवरण आगे भी जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूरे अनवर ने पाकिस्तान के हालात के बारे में दुआ की तहरीक करते हुए फ़रमाया कि आजकल पाकिस्तान के अहमदियों को विशेष रूप से दुआओं में याद रखें। पाकिस्तानी अहमदी स्वयं भी दुआओं की ओर ध्यान दें, सदक़ा देने की ओर ध्यान दें। अल्लाह तआला उनकी सुरक्षा करे, विरोधियों के उपद्रव से उन्हें बचाए तथा उपद्रवियों के उपद्रव उन पर उलटाए। सामान्य रूप से विश्व के लिए शुभ दुआएँ करें, अल्लाह तआला दुनिया को भी फ़ितने व फ़साद से बचाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, संपर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131